Read Only - Save a copy to edit.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष त्रयोदशी
विक्रम संवत 2081

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

गुरुवार, 28 नवंबर 2024
वर्ष 3, अंक 98, पृष्ठ 14
2 राज्य, 6 संस्करण
मूल्य 5 रुपये

अमृत विचार

कानपुर नगर
एक सम्पूर्ण अखबार

www.amritvichar.com

पारिस्थितिकी तंत्र के लिए वरदान है सैल्मन की वापसी 14 श्रीलीला ने किसिक के स्टेप्स सीख किया

ी में
ाष्ट्रीय

में 29 व 30
अंतरर्राष्ट्रीय
किया जाएगा।
इंटरनेशनल
टिव बिजनेस
है। सेमिनार
सर्च पेपर पेश
पेपर विदेशी
।
स प्रेसिडेंट
निदेशक डॉ.
और कांफ्रेंस
कुमार ने
नकारी दी।
ने बताया कि
में अमेरिका
लफ, यूके के
स, सर्बिया के
सुधीर राणा,
न, जर्मनी के
अरब के डॉ.
नकारी साझा
नीकि शिक्षा,
र पड़ने वाले
दी जाएगी।

प्राकृतिक खेती पर हो रहा सीएसए में शोध

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में हरी खाद, पत्ता गोभी, लोबिया (गर्मी), लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई, मूंग व टमाटर की प्राकृतिक खेती पर शोध चल रहा है। इसके साथ ही फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटक जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत एवं जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग, गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग का शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग के सस्यविद डॉ. राजीव ने दी।

उन्होंने बताया कि खेती में रासायनिक उर्वरकों और कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है। इस वजह से गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना समय की मांग है। इससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा, लागत में कमी आएगी और टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबको सुरक्षित व पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है।

3 साल तक चलेगा अध्ययन

डॉ.राजीव ने बताया कि यह अध्ययन तीन साल तक किया जाएगा। तीन साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती के आर्थिक विश्लेषण के बाद स्थानीय कृषि परिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा। प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए केंद्र सरकार की कैबिनेट ने 25 नवंबर को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत देश में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी दी है, जिसका लक्ष्य एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करना है।

सम
घाट
को
गई।
ज्ञानें
अख
मामा
अव
में द
उनक
क्षेत्री
में पि
पुत्री
बिल्ह
शिक
बता
शरा
को
माम
ताज
कान
नवंब
बाबा
साम
चोरी
बोल
घाट
सीए
किय

प्राकृतिक खेती समय की मांग : डॉ.राजीव

❑ केंद्र सरकार ने विगत 25 नवंबर को दी राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी

डॉ राजीव

कानपुर, 27 नवम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के शाकभाजी अनुभाग के सस्यविद डॉ राजीव ने बताया कि खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है, तथा गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा एवं खेती की लागत में कमी आएगी तथा टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा।

■ एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करने का लक्ष्य

प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबके लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस दिशा में डॉ राजीव ने बताया कि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में तीन फसल पद्धतियों जैसे न्हरीखाद पत्ता गोभीट्ट लोबिया (गर्मी), लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई तथा मूंग, टमाटर पर प्राकृतिक खेती का शोध किया जा रहा है। फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटकों जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग तथा गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग को शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। डॉ राजीव ने बताया कि कि गत वर्ष के अध्ययन के अनुसार सब्जी फसलों में गोबर की खाद 20 टन/हे0 व जैविक मल्चिंग 7.5 टन/हे0 के संयुक्त प्रयोग से सर्वाधिक पत्ता गोभी में 210.09 कुंतल, लोबिया (गर्मी फसल) में 89.28 कुंतल, लोबिया (खरीफ फसल) में 87.12 कुंतल, मटर में 82.12 कुंतल, तोरई में 168.02 कुंतल, मूंग में 9.10 कुंतल तथा टमाटर में 350.68 कुंतल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्राप्त हुई तथा इस प्राकृतिक विधि से प्राप्त उपज रासायनिक उर्वरकों की पैदावार के लगभग बराबर रही। उन्होंने बताया कि यह अध्ययन लगातार 3 साल तक किया जाएगा तथा 3 साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती का आर्थिक विश्लेषण के उपरांत स्थानीय कृषि परिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा। डॉ राजीव ने बताया कि प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए केंद्र सरकार की कैबिनेट ने 25 नवंबर को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत देश में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी दी है जिसका लक्ष्य एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करना है।

(आर्डर– 5 कायदा 1 व 5 मसमुआ जाब्ता दीवानी सन् 1907ई.)
न्यायालय अति. कले. प्र. श्रेणी/उप-जिलाधिकारी महोदय, तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।

वाद संख्या– T.202403410210609 सन् 2024
मधु शुक्ला
बनाम
जयदेवी आदि
धारा– 116 यू.पी.आर.सी. 2006
ग्राम– शाहपुर कामा
तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।
बनाम
1. जयदेवी पत्नी रामशंकर
2. मान सिंह
3. राम सिंह पुत्रगण रामशंकर निवासीगण ग्राम शाहपुर कामा तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।
4. दिनेश पाल पुत्र रामसनेही पाल
5. कु. अर्चना पाल
6. कु. रजनी पुत्रीगण स्व. रामसनेही निवासीगण ग्राम कामा पुरवा खण्ड शाहपुर कामा तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।
7. गंगा देवी पत्नी रामस्वरुप
8. शिव प्रसाद पुत्र रामलाल
9. कु. गीता पुत्री रामचन्द
10. कु. सजल नाबालिग उम्र 11 वर्ष पुत्री रामचन्द संरक्षिका शान्ती देवी माता
11. बहादुर पुत्र लक्षिमन
12. अशोक कुमार पुत्र गंगाराम
13. श्रीमती रामबेटी पत्नी गंगाराम निवासीगण ग्राम शाहपुर कामा तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।
14. प्रदीप कुमार
15. सतीश कुमार पुत्रगण सुरेश कुमार
16. श्रीमती लौंगश्री विधवा सुरेश कुमार निवासीगण ग्राम कामा पुरवा खण्ड शाहपुर कामा तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।
17. प्रेमचन्द पुत्र रामभरोसे
18. सतीप्रसाद पुत्रगण रामभरोसे
19. छोटेलाल पुत्र परमू
20. जगदीश पुत्र राजाराम
21. रामऔतार
22. राकेश कुमार
23. संजय कुमार पुत्रगण छोटेलाल
24. राधेश्याम
25. अमित कुमार पुत्रगण रामबाबू
26. श्रीमती रामबेटी पत्नी रामबाबू निवासीगण ग्राम शाहपुर कामा तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।
27. ग्रामसभा शाहपुर कामा द्वारा ग्रामप्रधान शाहपुर कामा परगना व तहसील बिल्हौर जिला कानपुर नगर।

वाजेह हो कि वादी मधु शुक्ला ने आपके नाम उक्त वाद धारा–116 यू.पी.आर.सी. 2006 के अन्तर्गत दायर किया है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 06.12.2024 को प्रातः 10 बजे बमुकाम अदालत या मार्फत वकील जो मुकदमा के हालात से वाकई वाकिफ किया गया हो, और जवाब देही दावा कीजिये और आपको लाजिम है कि उस रोज आप अपने जुमला दस्तावेज आदि जिन पर आप जवाबदेही इस्तदलाल कराना चाहते हैं, उसी रोज पेश कीजिये, आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा में बगैर हाजिरी आपके विरुद्ध फैसला होगा।

आज यह मेरे हस्ताक्षर व मुहर अदालत के दिनांक 22.11.2024ई. को जारी किया गया।

आज्ञा से
दिनांक :- 22.11.2024 उपजिलाधिकारी
बिल्हौर जिला कानपुर नगर।

आधुनिक रेल डिब्बा कारख़ाना, रायबरेली

पेंशन अदालत **सूचना** पेंशन अदालत

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली के कार्मिक विभाग में **दिनांक 16.12.2024 (सोमवार) को पेंशन अदालत** (आर.पी.एफ. व लेखा विभाग को छोड़कर) आयोजित की जा रही है।
आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली से सेवानिवृत्ति ऐसे कर्मचारी/अधिकारी जिन्हें समापन देयों के भुगतान से संबंधित कोई शिकायत है, तो पूरे विवरण सहित (अर्थात आवेदनकर्ता का पूरा नाम, कर्मचारी का अन्तिम पद, पी.पी.ओ. सं., कर्मचारी सं. सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि, शिकायत का विवरण, वर्तमान पूरा पता देते हुए) दो प्रतियों में आवेदन पत्र बंद लिफाफा जिस पर **"पेंशन अदालत-2024 के लिए"** लिखा हो, **दिनांक 10.12.2024** तक निम्न पते पर भेजें :-
"सहायक कार्मिक अधिकारी/वेतन
आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली लालगंज, जिला: रायबरेली (उ.प्र.) पिनकोड : 229120"
नोट: उपरोक्त विज्ञप्ति एमसीएफ रायबरेली की वेबसाईट https://mcf.indianrailways.gov.in Employee's corner Pension Adalat पर उपलब्ध है।
No. MCF/FS/Pension Adalat/2017
Dated: 20.11.2024
सहायक कार्मिक अधिकारी/वेतन
कृते महाप्रबंधक (कार्मिक)

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना सं. 12020242025 **दिनांक : 25.11.2024**

ई-निविदा सूचना

मण्डल रेल प्रबन्धक/ इंजीनियरिंग/उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्नलिखित निर्धारित कार्यों के लिये ई-निविदाएं प्रपत्र पर **दिनांक 18.12.204** तक आमंत्रित की जाती है। कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है :-

नि0 सं0 : 248 | **जेम बिड सं0 : GEM/2024/B/5636604 dated 25.11.2024**

कार्यों का विवरण : सहायक मंडल अभियंता/फतेहपुर एवं सहायक मंडल अभियंता/लाइन/प्रयागराज के लिए 02 वर्षों के लिए पूर्णतया अच्छी स्थिति में 01.04.2022 के बाद पंजीकृत 02 गैर-ए/सी वाहन (एर्टिगा, टवेरा, चेवरोलेट, जाइलो, टाटा सफारी, स्कार्पियो, इन्नोवा) को किराये पर लिए जाने का कार्य।

अनुमानित मूल्य (रू) : 17,13,600.00 | **अग्रिम धन राशि मूल्य (रू) : 34,280.00**
कार्य समापन की अवधि : 24 माह | **निविदा खुलने की तिथि : 18.12.2024**
पात्रता मापदंड के अन्तर्गत सिमिलर कार्य : निल

नोट :- (1) आनलाइन निविदा खुलने की तिथि **18.12.2024** तक प्रस्तुत की जा सकती है। **(2)** उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट **www.gem.gov.in** पर **दिनांक 18.12.2024** तक उपलब्ध है। **2038/24 (C)**

@CPRONCR North central railways cproncrly CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिये **मण्डल रल प्रबंधक/कार्य/झाँसी** निम्नलिखित कार्य हेतु आनलाईन (ई-टेन्डरिंग) के माध्यम से खुली निविदा आमंत्रित करते हैं।

कार्य का नाम: झाँसी-खैरार सेक्शन-प्रोटेक्शन ऑफ सीपेज थ्रू जॉइंट्स/गैप इन आरसीसी बॉक्स ऑफ एलएचएस एंड अदर एसोसिएटेड वर्क्स इन सबवे अंडर एडीईएन/महोबा एंड एडीईएन/बाँदा जूरिडिक्शन।

ई-निविदा सूचना संख्या	अनुमानित लागत	अमानत राशि
झाँसी-इन्जी.-ई-2024-216	₹ 22754922.00	₹ 263800.00

निविदा बंद होने की तिथि: 23.12.2024 at 15.00 hrs.
स्वीकृत पत्र जारी होने के समय से कार्य समापन/अवधि की तिथि: 08 माह।

कार्य का नाम: झाँसी-खैरार सेक्शन-प्रपोजल फॉर कवर ओवर ऑफ एप्रोच, सम्प वेल, रिपेयर टू रोड सरफेस, हम्प ईटीसी एट एलएचएस नंबर 415 अंडर एडीईएन/महोबा जूरिडिक्शन।

ई-निविदा सूचना संख्या	अनुमानित लागत	अमानत राशि
झाँसी-इन्जी.-ई-2024-217	₹ 19330240.88	₹ 246700.00

निविदा बंद होने की तिथि: 23.12.2024 at 15.00 hrs.
स्वीकृत पत्र जारी होने के समय से कार्य समापन/अवधि की तिथि: 06 माह।

- निविदा दिनांक 23.12.2024 को 15.00 बजे तक ऑन लाईन जमा कर सकेंगे।
- पूर्ण विवरण एवं निविदा को प्रस्तुति करने के लिए भारतीय रेल के वेब साइट http://www.iresp.gov.in पर देखें। **2040/24 FA**

North central railways @CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

एआई एवं मशीन लर्निंग

कानपुर, 27 नवम्बर। छत्रपति शाहू जी महाराज
ड्रग्स डिजाइन एंड डेवलेपमेंट विषय पर सात दि

■ विशेषज्ञों ने कंप्यूटर एडेड ड्रग डिस्
विभिन्न तरीको के बारे में दी जानक

माध्यम से मोलक्यूलर रिकग्निशन के बारे में ज
से दवा के ट्रायल में सफल होने की सम्भावना
कुमार ने सार्स कोविड के प्रोटीन पर भी बाइ
डॉकिंग करना सिखाया। उन्होंने गूगल क्लाउड

कार्यालय न

पत्रांक – 594/अल्प0नि0सू0/न0पं0पु0/
अल्प

नगर पंचायत पुरवा को वित्तीय वर्ष 202
शासकीय /अर्धशासकीय अभियंत्रण विभ
निविदायें कार्यालय नगर पंचायत पुरवा,
खोली जायेंगी। ठेकेदार निविदा खोले
अपरजिलाधिकारी न्यायिक /प्रभारी अधि
निविदा के साथ निर्धारित 5 प्रतिशत धरो
के पद नाम से बंधक कराकर जमा करन
निविदा प्रपत्र दिनांक 17.12.2024 को क
समस्त निविदाओं को बिना कारण बता
जानकारी कार्यालय नगर पंचायत से प्राप्त

क्र0 सं0	कार्य का नाम
1	वार्ड नं0 04 मो0 शीतलगंज मे आसरे के घर तक इन्टरला0 रोड
2	वार्ड नं0 05 मो0 चन्दीगढी मे के घार तक इन्टरला0 रोड कार्य
3	वार्ड नं0 05 मो0 चन्दीगढी मे के घर तक इन्टरला0 रोड कार्य
4	वार्ड नं0 07 मो0 वजीरगंज मे तक इन्टरला0 रोड कार्य
5	वार्ड नं0 07 मो0 वजीरगंज मे सी0सी0 रोड व नाली मरम्मत
6	वार्ड नं0 07 मो0 वजीरगंज मे सामने क्रासिंग कार्य।
7	वार्ड नं0 09 मो0 दुर्गापुर मे मु तक इन्टरला0 रोड कार्य।
8	वार्ड नं0 09 मो0 दुर्गापुर मे बल के घर तक इन्टरला0 रोड कार्य
9	वार्ड नं0 09 मो0 दुर्गापुर मे सु गौरीशंकर के घर तक इन्टरला0
10	वार्ड नं0 10 मो0 राजाबाजार मे रामस्वरूप व संजय खान के घर
11	वार्ड नं0 10 मो0 राजाबाजार मे नाली कवर कार्य
12	वार्ड नं0 10 मो0 राजाबाजार मे सुन्दरीकरण कार्य।
13	वार्ड नं0 11 मो0 जिन्दवाबाडी जुनेद के घर तक इन्टरला0 रोड
14	वार्ड नं0 11 मो0 जिन्दवाबाडी के घर तक नाली मरम्मत कार्य।
15	वार्ड नं0 11 मो0 जिन्दवाबाडी पीरबक्श के घर तक नाली मरम्म
16	वार्ड नं0 11 मो0 जिन्दवाबाडी कासिम के घर तक इण्टरलाकिंग

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 157 कानपुर, गुरुवार 28 नवम्बर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग

कानपुर । सीएसए के शाकभाजी अनुभाग के सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है, तथा गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा एवं खेती की लागत में कमी आएगी तथा टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबके लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस दिशा में डॉ राजीव द्वारा विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में तीन फसल पद्धतियों जैसे

हरीखाद पत्ता गोभीद्व लोबिया (गर्मी) लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई तथा मूंग, टमाटर पर प्राकृतिक खेती का शोध किया जा रहा है। फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटकों जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग तथा गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग को शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि गत वर्ष के अध्ययन के अनुसार सब्जी फसलों में गोबर की खाद 20 टन/हे0 व जैविक मल्चिंग 7.5 टन/हे0 के संयुक्त प्रयोग से सर्वाधिक पत्ता गोभी में 210.09 कुंतल, लोबिया (गर्मी फसल) में 89.28 कुंतल, लोबिया (खरीफ फसल) में 87.12 कुंतल, मटर में 82.12 कुंतल, तोरई में 168.02 कुंतल, मूंग में 9.10 कुंतल तथा टमाटर में 350.68 कुंतल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्राप्त हुई तथा इस प्राकृतिक विधि से प्राप्त उपज रासायनिक उर्वरकों की पैदावार के लगभग बराबर रही। उन्होंने बताया कि यह अध्ययन लगातार 3 साल तक किया जाएगा तथा 3 साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती का आर्थिक विश्लेषण के उपरांत स्थानीय कृषि परिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा।डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए केंद्र सरकार की कैबिनेट ने 25 नवंबर को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत देश में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी दी है जिसका लक्ष्य एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करना है।

बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र

कानपुर से प्रकाशित

E-mail :- deekshalayapravah@gmail.com

दीक्षालय प्रवाह

वर्ष : 02 अंक : 168 कानपुर, 28 नवम्बर, 2024 पेज-8 मूल्य : 3 रुपये

> पढ़ें पेज 2 पर

प्राकृतिक खेती समय की मांग : डॉक्टर राजीव

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के शाकभाजी अनुभाग के सस्यविद डॉ0 राजीव द्वारा बताया गया कि खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है, तथा गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा एवं खेती की लागत में कमी आएगी तथा टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबके लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस दिशा में डॉ0 राजीव द्वारा विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में तीन फसल पद्धतियों जैसे रूहरीखाद पत्ता गोभीऋ लोबिया (गर्मी), लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई तथा मूंग, टमाटर पर प्राकृतिक खेती का शोध किया जा रहा है। फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटकों जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग तथा गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग को शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। डॉ0 राजीव द्वारा बताया गया कि गत वर्ष के अध्ययन के अनुसार सब्जी फसलों में गोबर की खाद 20 टन/हे० व जैविक मल्चिंग 7.5 टन/हे० के संयुक्त प्रयोग से सर्वाधिक पत्ता गोभी में 210.09 कुंतल, लोबिया (गर्मी फसल) में 89.28 कुंतल, लोबिया (खरीफ फसल) में 87.12 कुंतल, मटर में 82.12 कुंतल, तोरई में 168.02 कुंतल, मूंग में 9.10 कुंतल तथा टमाटर में 350.68 कुंतल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्राप्त हुई तथा इस प्राकृतिक विधि से प्राप्त उपज रासायनिक उर्वरकों की पैदावार के लगभग बराबर रही। उन्होंने बताया कि यह अध्ययन लगातार 3 साल तक किया जाएगा तथा 3 साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती का आर्थिक विश्लेषण के उपरांत स्थानीय कृषि परिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा।डॉ0 राजीव द्वारा बताया गया कि प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए केंद्र सरकार की कैबिनेट ने 25 नवंबर को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत देश में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी दी है जिसका लक्ष्य एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करना है।

29.0°
अधिकतम
19.0°
न्यूनतम
www.twitter.com/worldkhabarexpress
www.facebook.com/worldkhabarexpress
www.youtube.com/worldkhabarexpress
WORLD
खबरें एक्सप्रेस

मिट्टी की सेहत में सुधार और टिकाऊ खेती का सपना होगा साकार: डॉक्टर राजीव

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के शाकभाजी अनुभाग के सस्यविद डॉ राजीव ने बताया कि खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है, तथा गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा एवं खेती की लागत में कमी आएगी तथा टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा।डॉ राजीव ने बताया कि प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबके लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस दिशा में डॉ राजीव द्वारा विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में तीन फसल पद्धतियों जैसे

हरीखाद पत्ता गोभीद्व लोबिया (गर्मी), लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई तथा मूंग, टमाटर पर प्राकृतिक खेती का शोध किया जा रहा है। फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटकों जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग तथा गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग को शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है।
डॉ राजीव ने बताया कि गत वर्ष के अध्ययन के अनुसार सब्जी फसलों में गोबर की खाद 20 टन/हे0 व जैविक मल्चिंग 7.5 टन/हे0 के संयुक्त प्रयोग से सर्वाधिक पत्ता गोभी में 210.09 कुंतल, लोबिया (गर्मी फसल) में 89.28 कुंतल, लोबिया (खरीफ फसल) में 87.12 कुंतल, मटर में 82.12 कुंतल, तोरई में 168.02 कुंतल, मूंग में 9.10 कुंतल तथा टमाटर में 350.68 कुंतल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्राप्त हुई तथा इस प्राकृतिक विधि से प्राप्त उपज रासायनिक उर्वरकों की पैदावार के लगभग बराबर रही। उन्होंने बताया कि यह अध्ययन लगातार 3 साल तक किया जाएगा तथा 3 साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती का आर्थिक विश्लेषण के उपरांत स्थानीय कृषि परिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा।

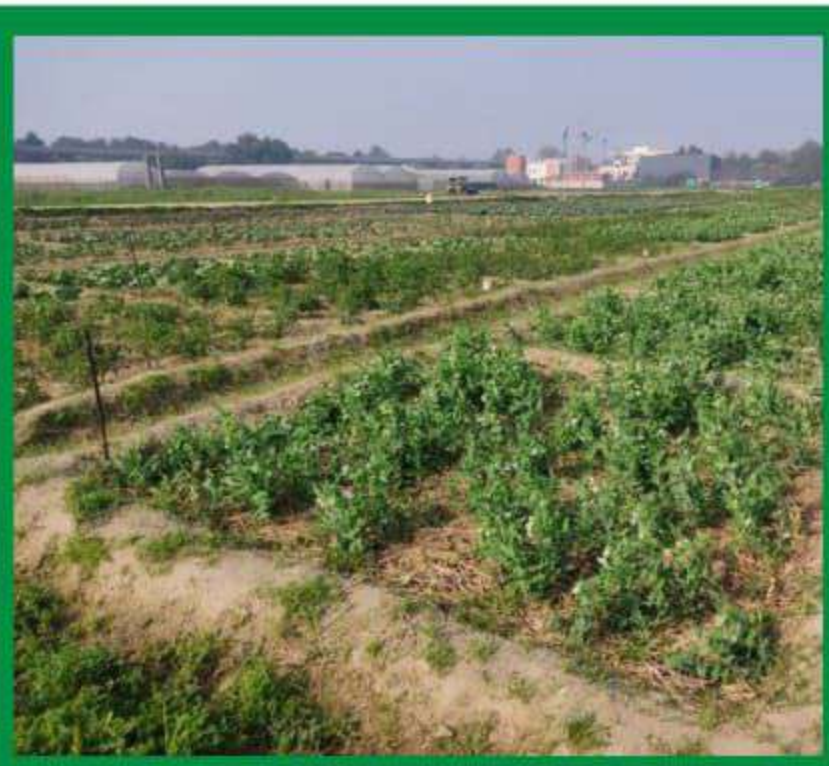

DT दीनार टाइम्स

प्राकृतिक खेती समय की मांग

डी टी एन एन। कानपुर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के शाकभाजी अनुभाग के सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है, तथा गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा एवं खेती की लागत में कमी आएगी तथा टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबके लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस दिशा में डॉ राजीव द्वारा विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में तीन फसल पद्धतियों जैसे न्हरीखाद पत्ता गोभीद्व लोबिया (गर्मी), लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई तथा मूंग, टमाटर पर प्राकृतिक खेती का शोध किया जा रहा है। फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटकों जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग तथा गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग को शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि गत वर्ष के अध्ययन के अनुसार सब्जी

फसलों में गोबर की खाद 20 टन/हे0 व जैविक मल्चिंग 7.5 टन/हे0 के संयुक्त प्रयोग से सर्वाधिक पत्ता गोभी में 210.09 कुंतल, लोबिया (गर्मी फसल) में 89.28 कुंतल, लोबिया (खरीफ फसल) में 87.12 कुंतल, मटर में 82.12 कुंतल, तोरई में 168.02 कुंतल, मूंग में 9.10 कुंतल तथा टमाटर में 350. 68 कुंतल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्राप्त हुई तथा इस प्राकृतिक विधि से प्राप्त उपज रासायनिक उर्वरकों की पैदावार के लगभग बराबर रही। उन्होंने बताया कि यह अध्ययन लगातार 3 साल तक किया जाएगा तथा 3 साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती का आर्थिक विश्लेषण के उपरांत स्थानीय कृषि परिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा।

11 अंक-264 कानपुर, गुरूवार 28 नवम्बर 2024 पृष्ठ-8 ₹ मूल

प्रकाशित

दैनिक
आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौदहा, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

आज का का
उत्तर प्रदेश के सभी तह
में संवाददाता नियुक्त
7985674606, 83

प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग

आज का कानपुर

कानपुर । सीएसए के शाकभाजी अनुभाग के सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है तथा गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग है जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा एवं खेती की लागत में कमी आएगी तथा टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबके लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा इस दिशा में डॉ राजीव द्वारा विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में तीन फसल पद्धतियों जैसे हरी खाद पत्ता गोभी लोबिया (गर्मी), लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई तथा मूंग, टमाटर पर प्राकृतिक खेती का शोध किया जा रहा है फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटकों जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग तथा गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग को शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि गत वर्ष के अध्ययन के अनुसार सब्जी फसलों में गोबर की खाद 20 टन/हेक्टेयर व जैविक मल्चिंग 7.5 टन/हेक्टेयर के संयुक्त प्रयोग से सर्वाधिक पत्ता गोभी में 210.09 कुंतल, लोबिया (गर्मी फसल) में 89.28 कुंतल, लोबिया (खरीफ फसल) में 87.12 कुंतल, मटर में 82.12 कुंतल, तोरई में 168.02 कुंतल, मूंग में 9.10 कुंतल तथा टमाटर में 350.68 कुंतल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्राप्त हुई तथा इस प्राकृतिक विधि से प्राप्त उपज रासायनिक उर्वरकों की पैदावार के लगभग बराबर रही। उन्होंने बताया कि यह अध्ययन लगातार 3 साल तक किया जाएगा तथा 3 साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती का आर्थिक विश्लेषण के उपरांत स्थानीय कृषि परिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए केंद्र सरकार की कैबिनेट ने 25 नवंबर को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत देश में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी दी है जिसका लक्ष्य एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करना है।